20

परमेश्वर की पवित्रता

1 पतरस 1:15, 16; प्रकाशितवाक्य 15:3, 4

''... सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है'' *(यशायाह 6:3)।*

1 पतरस 1:15, 16 कहता है ''पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं।'' क्रूस का अध्ययन करते हुए हमें परमेश्वर की अपरम्पार पवित्रता मिलती है।

परमेश्वर पवित्र है! हमें परमेश्वर की तरह पवित्र बनने के लिए नहीं कहा गया है, क्योंकि यह एक ऐसा बोझ होगा जिसे कोई उठाना नहीं चाहेगा (प्रेरितों 15:10)। परमेश्वर तिगुणा पवित्र है। वह ''पवित्र, पवित्र, पवित्र'' है (यशायाह 6:3)। वह केवल ''प्रेम, प्रेम, प्रेम'' या ''नियम, नियम, नियम'' ही नहीं है। परमेश्वर परमेश्वर है और इसका अर्थ यह है कि वह पवित्र है! क्रोध को ग्रहण करने या इसकी अनुमति देने के लिए हमें पवित्रता का उलट करना पड़ेगा। जब तक हम क्रोध को समझते नहीं हैं तब तक अनुग्रह या कृपा को न तो समझ सकते हैं न ग्रहण कर सकते हैं। प्रश्न यह नहीं है कि ''प्रेमी परमेश्वर किसी पापी को नरक में कैसे भेज सकता है?'' बल्कि यह है कि. ''पवित्र परमेश्वर किसी को नरक में कैसे *नहीं* भेज सकता है।''

पहली समस्या तब आती है जब हम परमेश्वर को वैसे नहीं देखते जैसा वह वास्तव में है। हमें परमेश्वर को अपने जैसा नहीं सोचना चाहिए। परमेश्वर के बारे में भावुक विचारों से परमेश्वर के बारे में मूर्खता भरी बातें पैदा होती हैं। आज परमेश्वर को ''अन्दर'' परमेश्वर बताया जाता है, परन्तु यह ''अन्दर'' वाला परमेश्वर पवित्र परमेश्वर नहीं है। आज लोग परमेश्वर को जानना और परमेश्वर की बात मानना नहीं चाहते। परन्तु वे उसे *महसूस करना* चाहते हैं (यूहन्ना 17:3)।

एक अर्थ में परमेश्वर के लक्षण नहीं हैं। उसे पायी (ऊपर-नीचे फल या मांस लगी पेस्ट्री) की तरह काटा नहीं जा सकता। वह *''पवित्र''* है! मूर्तियां पवित्र नहीं हैं और न पवित्र हो सकती हैं। परमेश्वर का नाम ''पवित्र'' है (यशायाह 57:15)। हमें परमेश्वर की ''भिन्नता'' को पहचानने की आवश्यकता है! वह किसी मानक से मेल नहीं खाता है, क्योंकि वह ही अन्त में मानक है। वह शुद्धता की सम्पूर्ण, अपार, असीम भरपूरी है, जो किसी और के जैसा नहीं हो सकता। परमेश्वर का आत्मा सच्चाई का आत्मा है।

हमें परमेश्वर के भय अर्थात आश्चर्य में जीना आवश्यक है। उसका अस्तित्व एकात्मक है। वह अलग-अलग भाग मिलकर काम नहीं करते, बल्कि वह *एक ही* है! परमेश्वर अपने आप से

कभी उलझता नहीं है। एक गुण दूसरे गुण के विपरीत नहीं है। वह ''चलता हुआ गृहयुद्ध'' नहीं है।

परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8, 16), परन्तु प्रेम परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर प्रेम का अर्थ बताता है, परन्तु प्रेम परमेश्वर का अर्थ नहीं बताता। पवित्रता से अलग होकर प्रेम का कोई अर्थ नहीं रह जाता। पवित्रता की मांग को प्रेम पूरा करता है। यदि परमेश्वर केवल यहां तक ही सीमित है तो परमेश्वर का व्यक्तित्व केवल प्रेम के जितना है। इस एक गुण (प्रेम) को छोड़ सब गुण निकाल दिए जाएं तो यह एक गुण परमेश्वर का विकल्प बन जाता है। प्रेम परमेश्वर की खूबी है, परन्तु प्रेम परमेश्वर नहीं है।

पवित्रता परमेश्वर की वह अद्‌भुत विशेषता है, जो उसे अपने बनाए हुए प्राणियों और किसी भी कथित देवता से अलग करती है। यह विशेषता परमेश्वर को अपना प्रेम देने या रख छोड़ने की अनुमति देती है। आश्चर्य की बात नहीं है कि बाइबल में ''पवित्र'' शब्द छह सौ से अधिक बार आया है। कोई बड़ी शक्ति ही आज्ञा मानने के लिए विवश कर सकती है। बीते अनादिकाल में परमेश्वर में न तो कुछ जुड़ा है और न उसमें से कुछ निकला है।

हमें पवित्र बनना आवश्यक है! हर मनुष्य के लिए पवित्र बनना उसका काम होना चाहिए! पवित्रता कठिन समयों में गिर क्यों जाती है? अफसोस की बात है कि मनुष्य जाति ने इसे अनाथ कर दिया है। व्यक्तिगत पवित्रता पुरानी बात हो गई है। हम यीशु के विषय में पवित्रता को उतना प्रोत्साहित नहीं करते हैं। आपने अन्तिम बार ''यीशु की पवित्रता'' के बारे में कब सुना था? पवित्रता मसीह तक जाने का रास्ता नहीं है, बल्कि मसीह पवित्रता का मार्ग है। मसीही व्यक्ति संसार में रहकर नहीं बल्कि संसार को अपने अन्दर रहने की अनुमति देने से बर्बाद होता है। पवित्रता केवल वही नहीं है जो परमेश्वर मुझे देता है बल्कि वह भी है जो मैं परमेश्वर की ओर से मिले जीवन में दिखाता हूं। पवित्रता एक स्थिति, व्यवहार और प्रक्रिया है।

पवित्रता को सस्ती, छद्‌म आत्मिकता से कम नहीं किया जा सकता। आत्मिकता दिखावटी हो सकती है या आध्यात्मिक होने की शेखी मारी जा सकती है। क्या कोई विनम्र होने का घमण्ड कर सकता है? विडंबना यह है कि महान लोगों को आमतौर पर पता नहीं होता कि उनकी महानता क्या है। दीन लोग अपनी दीनता का इनकार करते हैं!

बिना पवित्रता के हम परमेश्वर को देख नहीं सकते (इब्रानियों 12:14)। हमारे मन परमेश्वर के सामने पवित्रता में निर्दोष होने आवश्यक हैं (1 थिस्सलुनीकियों 3:12, 13)। हमें परमेश्वर के भय में पवित्रता में पूरा होना (2 कुरिन्थियों 7:1) और उसकी पवित्रता में भागीदार होना आवश्यक है (इब्रानियों 12:10)।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!